तत्त्व-सम्बन्धी मत
(THEORIES OF ULTIMATE REALITY)

विषय-प्रवेश

एक ही पदार्थ मनुष्य को भिन्न परिस्थितियों में भिन्न प्रतीत होता है। चलती गाड़ी से अगल-बगल के घर, पेड़, पहाड़ चलते नजर आते हैं। पानी में सीधी लकड़ी टेढ़ी दीखती है। इस प्रकार के अनुभवों की कमी मनुष्य के जीवन में नहीं है। इनसे चिन्तनशील मनुष्य के सामने एक समस्या उपस्थित हो जाती है। कौन वास्तविक है—चलते घर, पेड़, पहाड़ या उनका स्थिर रूप; गतिशील चन्द्रमा या उसका स्थिर रूप; पानी में टेढ़ी लकड़ी या उसका सीधा रूप? इसका उत्तर सरल प्रतीत होता है। शायद आप कहेंगे—लकड़ी सीधी रहती है, पर पानी में टेढ़ी दीखती है। पर इससे समस्या का समाधान नहीं होता है। लकड़ी ऐसी क्यों प्रतीत होती है और क्यों उसे उसका अवास्तविक (Unreal) रूप कहा जाता है? इसी से तत्त्व (Reality) और आभास (Appearance) की समस्या उपस्थित होती है। संसार में विभिन्न प्रकार के जड़ पदार्थ हैं; जैसे, घर, टबुल, कुर्सी इत्यादि। यूँ तो एक-दूसरे से भिन्न हैं पर प्रत्येक जड़ द्रव्य के ही बने हुए होते हैं। विशिष्ट पदार्थों में परिवर्तन हो जाता है, पर वह जड़ द्रव्य जिससे वे बनते हैं, बदलता नहीं। जड़ पदार्थों के अतिरिक्त मनुष्य को अपने विचारों का या जीवन का भी अनुभव होता है। ये जड़ पदार्थ से भिन्न माने जाते हैं। जिस प्रकार विश्व के सभी जड़ पदार्थ जड़ द्रव्य के ही व्यक्त रूप हैं, क्या उसी प्रकार यह सम्भव नहीं है कि कोई ऐसा मूल तत्त्व हो, जिससे सम्पूर्ण विश्व के अनुभूत पदार्थ उत्पन्न हुए हों? यह समस्या मूल तत्त्व (Ultimate Reality) की ओर संकेत करती है। दूसरे शब्दों में, समस्या यह है कि मूल तत्त्व (Ultimate Reality) क्या है—जड़ (Matter) या चित (Spirit) या दोनों अथवा कोई नहीं? मूल तत्त्व (Ultimate Reality) की संख्या (Number) क्या है? वे कितने प्रकार (Kinds) के हैं? इन प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर दिये गये हैं। दर्शन के आरम्भ-काल से ही इन प्रश्नों पर चिन्तन हो रहा है।

समस्या (*Problem*)

मूल तत्त्व के विषय में दो मुख्य समस्याएँ हैं :—

(i) मूल तत्त्व की संख्या क्या है? विश्व एक ही तत्त्व से बना है या दो से अथवा अनेक तत्त्वों से? संसार की अनेकता सत्य है अर्थात् अनेक पदार्थ वास्तव में भिन्न हैं या उनमें एकता है या वे सब दो प्रकार हैं? सभी प्रश्न एक ही समस्या को इंगित करते है कि मूल तत्त्व की संख्या कितनी है।

Scanned with CamScanner

(ii) मूल तत्त्व की प्रकृति या स्वरूप (Nature) क्या है अर्थात् वह किस तरह का है—जड़ या चेतन या दोनों या तटस्थ?

पहले प्रश्न से सम्बन्धित एक दूसरी समस्या है कि मूल तत्त्व कितने प्रकार का है। मूल तत्त्व एक ही प्रकार के होते हुए भी अनेक हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, एक आलमारी में एक ही प्रकार की पुस्तकें रह सकती हैं, पर अनेक संख्या में। इसलिए एक ही मत एकवादी (Monistic) और अनेकवादी (Pluralistic) दोनों हो सकता है। मूल तत्त्व का स्वरूप एक मानने से यह एकवाद और संख्या में उसे अनेक मानने से अनेकवाद कहलायगा। इसी प्रकार अनेक मूल तत्त्व होने से भी उनका स्वरूप एक या दो माना जा सकता है।

कुछ दार्शनिकों ने इन दोनों समस्याओं के भेद को स्पष्ट करने के लिए संख्या-सम्बन्धी एकवाद को एकत्ववाद (Singularism) और स्वरूप-सम्बन्धी एकवाद को एकतत्त्ववाद (Monism) कहा है। पर सरलता के लिए हम दोनों को एकवाद (Monism) ही कहेंगे।

(क) मूलतत्त्व का स्वरूप
(Nature of the Ultimate Reality)

मूलतत्त्व का स्वरूप क्या है? क्या मूल तत्त्व, जिससे विश्व बना है, निर्जीव, अचेतन अर्थात् जड़रूप (Material) है या अमूर्त्त, चेतन अर्थात् चिदात्मरूप (Spiritual) या जड़-चेतन (Dual) रूप या तटस्थ (Neutral)।

इसके विषय में चार मत हैं :—

(i) भौतिकवाद (Materialism)
(ii) अध्यात्मवाद (Spiritualism or Idealism)
(iii) द्वैतवाद (Dualism)
(iv) तटस्थवाद (Neutralism)

साधारण विचार द्वैतवादी होता है। द्वैतवाद के अनुसार जड़ और चेतन दोनों ही मूल हैं। एक का दूसरे में रूपान्तर नहीं होता है। दोनों विरोधात्मक हैं। पर द्वैतवाद की यह कठिनाई कि दोनों विरोधी तत्त्वों में सम्बन्ध कैसे हो सकता है, मनुष्य को एकवादी मत की ओर ले जाता है। इसी के फलस्वरूप एकवादी मत भौतिकवाद, अध्यात्मवाद और तटस्थवाद हैं। जड़वाद के अनुसार केवल जड़त्व ही मूल है। चेतन जड़ का ही एक रूप है। इसके विपरीत अध्यात्मवादियों ने चेतन तत्त्व को ही मूल और जड़ को उसका विवर्त कहा है। जड़ और चेतन के द्वैतवाद को मिटाने का प्रयत्न तटस्थवादियों ने मूल तत्त्व को निर्विशेष बतलाकर किया है।

...ों की व्याख्या करने के पहले यह विचार कर लेना चाहिए कि ...

Scanned with CamScanner

4. तटस्थवाद
(Neutralism)

साधारणतः संसार में दो प्रकार के पदार्थ दीखते हैं, जड़ और चेतन। द्वैतवादी दोनों को सत्य मानते हैं, भौतिकवादी जड़तत्त्व को मूल बतलाते हैं और अध्यात्मवादी चेतन को। तटस्थवादियों का विचार इन सभी मतों से भिन्न है।

उनके अनुसार मूलतत्त्व का स्वरूप न जड़ात्मक है और न चिदात्मक, बल्कि दोनों से तटस्थ। मूलतत्त्व को न भौतिक कहा जा सकता है और न चेतन, और न दोनों का सम्मिश्रण। विश्व के जड़ पदार्थ और चेतन पदार्थ दोनों सत्य हैं। एक की उत्पत्ति दूसरे से नहीं होती। एक दूसरे से भिनन है। पर यह भेद केवल बनावट का है, उन दोनों के अन्दर विद्यमान तत्त्व एक प्रकार का है, जो दोनों से परे है। वह तत्त्व मूल है। इसी तटस्थ या निर्विशेष मूलतत्त्व से जड़ और चेतन की उत्पत्ति होती है। इसीलिए जड़ और चेतन में मौलिक भेद नहीं है। एक ही प्रकार के मूल तत्त्व के ये दो पहलू हैं। दोनों का निर्मायक तत्त्व एक प्रकार का है; किसी कपड़े को यदि लाल रंग में रँग दिया जाय और फिर हरे रंग में तो उनके रंग में या रूप में भेद हो जायगा, पर उनका आन्तरिक तत्त्व एक ही प्रकार का रहता है। इसी प्रकार मूलतत्त्व जड़ और चेतन दोनों से तटस्थ है, निर्विशेष है।

यह सिद्धान्त भौतिकवाद, अध्यात्मवाद और द्वैतवाद की कठिनाइयों को ध्यान में रखकर ही अपने विचारों को प्रतिपादित करता है। भौतिकवाद और अध्यात्मवाद एकवादी मत हैं, पर उनसे विश्व की समुचित व्याख्या नहीं हो सकी है। इसका मुख्य कारण यह

Scanned with CamScanner

है कि मूलतत्त्व का स्वरूप जड़ या चेतन में से कोई एक मानकर दूसरे की उत्पत्ति वे उसी से बतलाते हैं। पर जड़तत्त्व और चेतन तत्त्व की परस्पर विरोधी विशेषताएँ हैं। इसलिए एक की उत्पत्ति या विकास दूसरे से मानना न्याय-संगत नहीं प्रतीत होता। तटस्थवाद के मूलतत्त्व का स्वरूप दोनों से परे बतलया गया है। जड़ और चेतन दोनों उसी एक प्रकार के तत्त्व से बने हैं। अतः यह मत भौतिकवाद और अध्यात्मवाद की भाँति ही एकवादी मत है, पर एकांगी नहीं। जड़ और चेतन दोनों को उसी निर्विशेष तत्त्व का समान पहलू माना गया है।

द्वैतवाद में अध्यात्मवाद और भौतिकवाद की कठिनाइयों का परिहार दूसरे तरीके से किया गया है। उसमें जड़ और चेतन दोनों को पारमार्थिक बतलाया गया है। अतः मूलतत्त्व की प्रकृति एकात्मक नहीं, बल्कि उसमें द्वैत का विचार अपनाया गया है। पर दोनों की विरोधी विशेषताओं के कारण उनके सम्बन्ध की सन्तोषजनक व्याख्या नहीं हो सकती। तटस्थवाद में मूलतत्त्व को एक ही प्रकार का बतलाया गया है तथा जड़ और चेतन को पारमार्थिक या मूल नहीं माना गया। जड़ और चेतन, दोनों मूलतत्त्व से ही उद्‌भूत होते है। ऐसा कहा जा सकता है कि यदि जड़ और चेतन दोनों में परस्पर विरोधी विशेषताएँ हैं इसलिए एक ही उत्पत्ति या विकास दूसरे से सम्भव नहीं है तब दोनों एक तटस्थ तत्त्व से कैसे उद्‌भूत होते हैं? तटस्थवादी बतलाते हैं कि मूलतत्त्व एक ही प्रकार का है; वह है तटस्थ तत्त्व, न जड़ और न चेतन। पर उन्हीं तत्त्वों में विभिन्न सम्बन्ध के कारण उनका विभिन्न स्वरूप हो जाता है। एक प्रकार के सम्बन्ध में उनका स्वरूप जड़ात्मक और उन्हीं तत्त्वों का दूसरे प्रकार के सम्बन्ध में स्वरूप चिदात्मक हो जाता है। इसलिए जड़ पदार्थ तथा चेतन पदार्थों का मूलतत्त्व एक ही प्रकार का है—तटस्थ तत्त्व। इसे वे एक चित्र के द्वारा प्रदर्शित करते हैं। बगल वाली चित्र केवल रेखाओं से निर्मित है पर विभिन्न सम्बन्धों में इनकी अलग-अलग तस्वीर बनती है। यदि सम्पूर्ण लें तो एक तारे का चित्र बन जाता है; यदि त्रिभुज के रूप में लें तो दो उल्टे बड़े-बड़े त्रिभुज हैं या कई छोटे-छोटे त्रिभुज। ऐसे ही, एक ही प्रकार के तटस्थ तत्त्वों के अलग-अलग सम्बन्धों के कारण उन्हीं से जड़ तत्त्व का तथा चेतन-तत्त्व का भी निर्माण होता है।

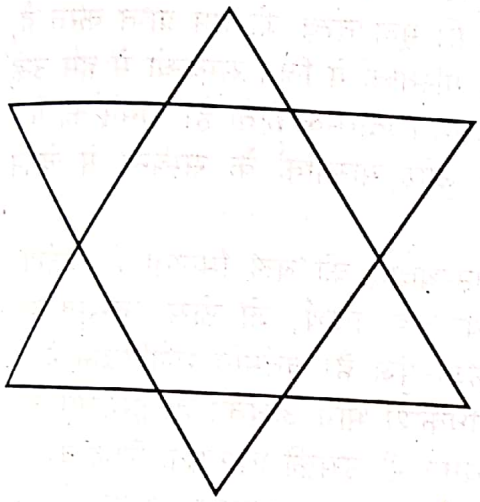

सारांश

(i) मूलतत्त्व का स्वरूप न जड़ात्मक है, न चिदात्मक अपितु दोनों से तटस्थ। मूलतत्त्व विर्विशेष तत्त्व है।

(ii) जड़तत्त्व तथा चेतन तत्त्व के घटक तत्त्व तटस्थ तत्त्व हैं।

(iii) भौतिकवाद तथा अध्यात्मवाद की भाँति यह मत भी स्वरूप की दृष्टि से एकवादी मत है। मूलतत्त्व एक ही किस्म का है।

(iv) एक प्रकार के तत्त्वों में ही विभिन्न सम्बन्धों के कारण जड़ पदार्थ तथा चेतन पदार्थ निर्मित होते हैं।

Scanned with CamScanner